B.A. II Part २४/८/२१ डॉ० आनन्द कुमार
Hindi Hons प्रश्नः - एस०एन०एस० कॉ०, जहानाबाद

ने भारतेन्दु की शैली छोड़कर अंग्रेजी शैली अपनायी। सूत्रधार प्रस्ता-
वना आदि को समाप्त कर दिया गया। अंक दृश्य में विभाजित हो गया।
दृश्य और सूच्य का भेद समाप्त हो गया। अभिनय नाटकों में नाट्य-
शास्त्र के बन्धन को अस्वीकृत कर दिया गया। इसी काल में जय-
शंकर प्रसाद का आविर्भाव हुआ जो आधुनिक नये नाटकों के जन्म-
दाता माने जाते हैं। नाटकों के इस उत्थान काल को प्रसाद युग
के नाम से भी जाना जाता है।

प्रसाद के नाटक क्षेत्र में अवतीर्ण होने से हिन्दी नाट्य-
साहित्य का कायाकल्प हो गया। आधुनिक हिन्दी नाटकों का पूर्ण
साहित्यिक स्वरूप इन्हीं के नाटकों में दिखाई दिया। प्रसाद ने गंभीर
ऐतिहासिक अध्ययन के आधार पर प्राचीन भारतीय गौरव और
सभ्यता का चित्र उपस्थित करने वाले ऐतिहासिक नाटक लिखे।
इसके कथानक महाभारत के उत्तरार्द्ध काल से लेकर सम्राट हर्षवर्द्धन
के शासन काल तक लिये गये, क्योंकि यही काल भारतीय सभ्यता के
गौरव का काल रहा है। प्रसाद के प्रयास और हिन्दी नाट्य-शैलि-
रूप में मूलभूत परिवर्तन हुए। नाटक के विन्यास में वैचित्र्य
आया। प्राचीन नाट्य-शास्त्रों का उल्लंघन हुआ। इनके नाटकों में
वर्जित दृश्य वध, आत्महत्या, युद्ध आदि दृश्यों का समावेश किया
गया। प्रसाद ने मनोवैज्ञानिक चरित्र-चित्रण पर अधिक बल दिया।
इसमें भारतीय और यूरोपीय दोनों नाट्य-प्रणालियों का सुन्दर
समन्वित रूप मिलता है। प्रसाद ने यूरोप में प्रचलित शील वैचि-
त्र्यवाद का पूर्ण रूप से अनुकरण न कर रस-विधान और शील-
वैचित्र्य का सामंजस्य रखा। इनके नाटक हैं- स्कन्दगुप्त, अजात-
शत्रु, चन्द्रगुप्त, ध्रुवस्वामिनी, विशाख, कामना, जनमेजय का नाग-
यज्ञ, राज्यश्री और एक घूँट। इनमें से 'एक घूँट' और 'कामना' के
अतिरिक्त अन्य सभी ऐतिहासिक नाटक हैं।

प्रसाद का युग राजनैतिक, सामाजिक और धार्मिक उथल-
पुथल का युग था। इस परिस्थिति ने हमें बाध्य किया कि अपनी
संस्कृति और राष्ट्रीयता के विषय में गंभीरता से सोचें, उस समय
कोई हल नहीं सूझता था। प्रसाद ने इसीलिए अतीत की ओर देखा,
पद दलित जाति के लिए उसका गौरव पूर्ण अतीत बड़ा आकर्षक होता
है। दूसरा कारण यह था कि प्रसाद मूलतः दार्शनिक थे और वह भी
ऐसे दार्शनिक जो दर्शन को व्यावहारिक जीवन में उतारने और उसका